HISTORY

B.A.PART-II (Subs)

Paper-II (Mughal period)

Unit-I, (The Rajput Policy Of Akbar)

Dr. GUDDY KUMARI

(Guest Lecturer), History Deptt.

A.N.D. College, Samastipur

Lecture Series - 58

"अकबर की राजपूत नीति"

(The Rajput Policy Of Akbar)

भारतीय समाज और इतिहास के निर्माण में राजपूतों का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण था। राजपूत वीरता, साहस स्वाभिमान, स्वतंत्रता में अद्‌वितीय माने जाते थे। बाबर ने खानवा के युद्‌ध में राजपूतों के प्रमुख सरदार राणा संग्राम सिंह को पराजित किया था। किंतु राणा सांगा की पराजय के बावजूद राजपूताना में अनेक शक्तिशाली राज्यों का उदय हो चुका था। यह राज आपस में बटे हुए थे। परंतु धर्म एवं संस्कृति की दृष्टि से एक सूत्र में बंधे हुए थे। अकबर स्वयं दूरदर्शी और राजपूतों की शक्ति को अच्छी तरह पहचानता था। अतः उसने राजपूतों के संभावित खतरे

Dr Guddy Kumari (A.N.D College)

को दूर करने के उद्देश्य से राजपूतों के साथ मित्रता, उदारता, सहयोग एवं वैवाहिक संबंध की नीति अपनाकर उन्हें शत्रु के बदले मित्र बनाने का निर्णय लिया।।

अकबर ने राजपूतों के साथ सांप भी मरे और लाठी भी ना टूटे की नीति अपनाई थी। उसने राजपूत राज्यों को स्वाधीन रखकर एक ओर यदि उनके स्वाभिमान की रक्षा की तो दूसरी ओर से मुगल साम्राज्य की संप्रभुता स्वीकार करवाकर उन्हें अपना सहायक भी बना लिया। उसने राजपूतोंं को गूगल सेना और प्रशासन में ऊंचे ऊंचे पदों पर नियुक्ति का अवसर दिया। राजपूतों ने मुगलों के साथ कंधा से कंधा मिलाकर मुगल साम्राज्य के विस्तार में महत्वपूर्ण योगदान दिया। वह मुगलों के प्रति स्वामी भक्ति का प्रदर्शन करने लगे। अतः अकबर की राजपूत नीति उसकी अद्वितीय प्रतिभा, दूरदर्शिता और कुशल कूटनीतिज्ञता का परिचायक था।

राजस्थान विजय:-

राजस्थान के राजपूत शासक अपने पराक्रम, आत्मसम्मान एवं स्वतन्त्रता के लिए प्रसिद्ध थे। अकबर ने राजपूतों के प्रति विशेष नीति अपनाते हुए उन राजपूत शासकों से मित्रता एवं वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित किये जिन्होंने उसकी अधीनता स्वीकार कर ली। जिन्होंने अधीनता स्वीकार नहीं की उनसे युद्ध के द्वारा अकबर ने अधीनता स्वीकार करवाने का प्रयत्न किया।

Dr Guddy kumari (A.N.D College)

आमेर (जयपुर)-

1562 में अकबर द्वारा अजमेर की शेख मुईनुद्दीन चिश्ती दरगाह की यात्रा के समय उसकी मुलाकात आमेर के शासक राजा 'भारमल' से हुई । भारमल प्रथम ऐसा राजपूत शासक था जिसने स्वेच्छा से अकबर की अधीनता स्वीकार की । कालान्तर में भारमल या बिहारी मल की पुत्री से अकबर ने विवाह कर लिया, जिससे जहांगीर पैदा हुआ । अकबर ने भारमल के (दत्तक) भगवान दास एवं पौत्र मान सिंह को उच्च मनसब प्रदान किया।

मेड़ता-

मेड़ता का शासक जयमल मेवाड़ के राजा उदय सिंह का सामन्त था | मेड़ता पर आक्रमण के समय मुगल सेना का नेतृत्व 'सैरफुद्दीन कर रहा था । इसने जयमल एवं देवदास से मेड़ता की छीन कर 1562 में मुगलों के अधीन कर दिया।

गोंडवाना विजय :-

1564 में अकबर ने गोंडवाना विजय हेतु 'आसफ खां' को भेजा । तत्कालीन गोंडवाना राज्य की शासिका महोबा की चन्देल राजकुमारी रानी दुर्गावती जो अपने अल्पायु पुत्र वीर नारायण की संरक्षिका के रूप में शासन कर रही थी, ने आसफ खां के नेतृत्व वाली मुगल सेना का

Dr Guddy Kumari (A.N.D College)

डट कर मुकाबला किया । अन्ततः मां और पुत्र दोनों वीरगति को प्राप्त हुए। 1564 में गोंडवाना मुगल साम्राज्य के अधीन हो गया।

मेवाड़-

मेवाड़ राजस्थान का एक मात्र सा राज्य था जहाँ के राजपूत शासक ने मुगल शासन का सदैव विरोध किया । अकबर का समकालीन मेवाड़ शासक सिसोदिया वंश का राणा उदय सिंह' था जिसने मुगल सम्राट अकबर की अधीनता नहीं स्वीकारा। अकबर ने मेवाड़ को अपने अधीन करने के लिए 1567 में चित्तौड़ के किले पर आक्रमण कर दिया । उदय सिंह ने किले की सुरक्षा का भार जयमल' व फत्ता (फतेह सिंह) को सौप कर समीप की पहाड़ियो में खो गया । इन दो वीरों ने बड़ी बहादुरी से मुगल सेना का मुकाबला किया पर अन्ततः दोनों युद्ध क्षेत्र में वीरगति को प्राप्त हुए । अकबर ने किले पर अधिकार के बाद करीब 30,000 राजपूतों का कत्ल करवा दिया। यह नरसंहार अकबर ने नाम पर एक बड़े धब्बे के रूप में माना गया जिसे मिटाने के लिए अकबर ने आगरा किले के दरवाजे पर जयमल एवं फत्ता की वीरता की स्मृति में उनकी प्रस्तर मूर्तियां स्थापित करवायी। 1568 में मुगल सेना ने मेवाड़ की राजधानी एवं चित्तौड़ के किले पर अधिकार कर लिया ।

रणथम्भौर विजय (1569):-

Dr.Guddy kumari (A.N.D College)

रणथम्भौर के शासक बूंदी के हाड़ा राजपूत 'सुरजन राय' से अकबर ने 18 मार्च 1569 को दुर्ग अपने कब्जे में ले लिया।

कालिंजर विजय (1569):-

उत्तर प्रदेश के बांदा जिले में स्थित यह किला अभेद्य माना जाता था । इस पर रीवा के 'राजा रामचन्द्र' का अधिकार था। मुगल सेना ने मजनू खा के नेतृव में आक्रमण कर कालिंजर पर अधिकार कर लिया। राजा रामचन्द्र को इलाहाबाद के समीप एक जागीर दे दी गयी।

1570 में मारवाड़ के शासक 'राम चन्द्र सेन, बीकानेर के शासक 'कल्याण मल' एवं जैसलमेर के शासक 'रावल हरराय ने अकबर की अधीनता स्वीकार की। इस प्रकार 1570 तक मेवाड़ के कुछ भागों को छोड़ कर शेष राजस्थान के शासकों ने मुगल अधीनता स्वीकार कर ली । अधीनता स्वीकार करने वाले राज्यों में कुछ अन्य थे- डूंगरपुर, बांसवाड़ा एवं प्रतापगढ़ ।

हल्दीघाटी का युद्ध (18 जून 1576):-

उदय सिंह की मृत्यु के बाद मेवाड़ का शासक महाराणा प्रताप हुआ। अकबर ने मेवाड़ को पूर्णरूप से जीतने के लिए अप्रैल 1576 में आमेर के राजा मान सिंह एवं आसफ ख के नेतृत्व में मुगल सेना को आक्रमण के लिए भेजा । दोनों सेनाओं के मध्य अरावली पहाड़ी की हल्दी घाटी नामक शाखा के बीच के मैदान में संघर्ष हुआ। परिणाम मुगल सेना के

Dr Guddy Kumari (A N D College)

पक्ष में रहा । राणा प्रताप को अपने को सुरक्षित रखने हेतु समीप की पहाड़ियों में जाना पड़ा। यह अभियान भी मेवाड़ पर पूर्ण अधिकार के बिना ही समाप्त हो गया।

1599 में राणा प्रताप की मृत्यु के बाद उसका पुत्र अमर सिंह उत्तराधिकारी हुआ। इसके शासन काल 1599 में मानसिंह के नेतृत्व में एक बार फिर मुगल सेना ने आक्रमण किया । अमरसिंह की पराजय के बाद भी मेवाड़ अभियान अधुरा रहा जिसे बाद में जहांगीर ने पूरा किया।

अकबर की राजपूत नीति की समीक्षा

अकबर पक्का साम्राज्यवादी था। वह भारतवर्ष के अनेक छोटे-बड़े राज्यों पर अधिकार कर मुगलों का एक आधिपत्य भारत में काम करना चाहता था। इसके लिए उसने राजपूतों के साथ वैवाहिक संबंध कायम की और उनकी शत्रुता को मित्रता का जामा पहना दिया। राजपूत मुगल साम्राज्य के लिए स्तंभ के रूप में काम करने लगे। राजपूतों को सेना और प्रशासन में महत्वपूर्ण पदों पर नियुक्त की गई। इससे अकबर को दोहरा लाभ हुआ। एक तो राजपूत वचन के पक्के होते थे और दूसरा उनके सहयोग से अकबर अन्य राजाओं पर विजय प्राप्त करने में सफल हुआ। इसके अतिरिक्त तुर्क सेना और सरदारों का एकाधिपत्य भी नष्ट हो गया और वे अकबर के विरुद्ध षड्यंत्र करने में असफल रहे।

Dr Guddy kumari (A.N.D College)

अकबर राजपूत राजाओं को सम्मान की दृष्टि से देखता था। जिन राजाओं ने अकबर की अधीनता स्वीकार कर ली। उन्हें स्वाधीन रहने का अवसर देकर उनके स्वाभिमान की रक्षा अकबर ने की। उसने किसी राजा को बलपूर्वक अपनी पुत्री से विवाह करने के लिए विवश नहीं किया था। स्वेचछा से राजपूत राजाओं ने अपनी पुत्रियों का विवाह अकबर के साथ कर दिया था। अकबर ने राजपूतों के सामाजिक आर्थिक या धार्मिक जीवन में हस्तक्षेप करने की चेष्टा नहीं की। उसने बाबर की तरह राजपूतों के साथ युद्ध को जिहाद की संज्ञा नहीं दी थी। मेवाड़ के विरुद्ध अकबर का संघर्ष साम्राज्यवादी विस्तार की नीति का ही प्रतिरूप था।

मुगल राजपूत सहयोग के फलस्वरुप भारतीय कला एवं संस्कृति के क्षेत्र में एक नया मोड़ आ गया। अनेक राजपूत सरदार कला और संस्कृति के पोषक थे। सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन में समन्वय आया तथा एक नई संस्कृति विकसित हुई। अकबर ने राजपूतों के सहयोग से मुगल साम्राज्य को सबल बना लिया और उसके विकास का मार्ग प्रशस्त कर दिया।

धन्यवाद

Dr Gudav Kumari (A.N.D College)